# ये निराकार, कब और क्यूँ, होता है साकार

एक दिन यूँ ही, मेरे मन में आया एक विचार
कि ये निराकार, कब और क्यूँ, होता है साकार
मेरा मन इस प्रश्न का जवाब खोजता था
और इस के जवाब में, रह-रह कर यह सोचता था
कि शायद तब, जब सृष्टि के समस्त प्राणियों में से, इंसान
समझने लगता है,खुद को आसमान
और उसकी यह समझ, इस कदर बढ़ जाती है
कि केवल पशुता ही उसके जीवन का अंग बन जाती है
कद-पद के मद में चूर
विज्ञान की ऊँचाईयों से भरपूर
धृतराष्ट्र की औलाद की तरह जीवन बिताता है
मेरी समझ से, तब यह निराकार साकार बन आता है
और आकर करता है, फिर से सृष्टि का शृंगार
देकर अपने जीवनदाई सुंदर विचार
कि,"एक नूर से सब जग उपज्या , कौन भले, कौन मंदे"
इसी नूर का ही करवा के पहचान
दुरुस्त कर देता है,हर किसी का ईमान
क्योंकि नूर नज़र आए,
तो दुष्ट भी देवता बन जाए
वरना, देवता भी कब दुष्ट बन हो जायेगा
ये पता नहीं चल पायेगा
शायद इसीलिए,
इबलीश का रुतबा-शान-शौकत तथा उसके सारे अरमान
हो गये मिट्टी-पलीद, जब उसे, फरिश्तों में से निकालकर
बना दिया गया, एक नीचे दर्जे का शैतान

क्योंकि कद-पद के मद में चूर
रूप-रंग-नस्ल में वह इस तरह से फँस गया
कि बेचारा इबलीश, नूर ना देख सका
इसलिए दोज़ख की आग में धँस गया
मेरे मन का यह तर्क, कुछ हद तक मुझे अच्छा लगा
लेकिन,इसके साथ मन के ही किसी कोने में एक प्रश्न और जगा
कि जब निराकार होकर साकार, सुंदर सृजन अभियान चलायेगा
फिर कोई कैसे,इसे पहचान पायेगा
इस प्रश्न के जवाब हेतु,मैने बुद्धि को दौड़ाया
तो शास्त्रों के माध्यम से ये जवाब पाया
"जासु कृपा सब भ्रम मिटि जाई ।
गिरिजा सोई कृपालु रघुराई ।।"
अर्थात जिसकी कृपा से भ्रम या द्वैत भाव समाप्त हो
सर्वत्र केवल ब्रह्म ही ब्रह्म व्याप्त हो
ऐसा भासित होने लगे
अथवा, जिसकी वज़ह से पुनः मानवतावादी विचार के
पनपने की शुरुआत हो
जातिगत-दलगत भावनाओ से ऊपर उठकर
मानव जाति साथ-साथ हो
ऐसा दृश्य व परिदृश्य, जहाँ पर भी स्थित है ।
मेरी समझ से वहीं निराकार, साकार बन उपस्थित है ।।

**राधेश्याम 'सत्यार्थी'**

# तुम सत्गुरु के प्यारे थे

सत्गुरु सबका प्यारा है,तुम सत्गुरु के प्यारे थे ।।
सत्गुरु की मुस्कान थे तुम,सत्संग के राजदुलारे थे।।

पद-प्रतिष्ठा पाकर भी, तुम सदा शुद्ध निरंकारी थे
मानवता की खुश्बूवाली, तुम सुंदर फुलवारी थे
प्यार हमेशा देनेवाले, तुम सच्चे अधिकारी थे
असाधारण प्रतिभावाले, तुम दिव्य पुरुष अवतारी थे
जीवन के हर पक्ष में जीते, पर, गुरु-चरणों में हारे थे ।।
सत्गुरु सबका प्यारा है,तुम सत्गुरु के प्यारे थे ।।

मत ऊँची,मन नीचा, खुद सीखे और सिखाते थे
रायबहादुर खानदान,पर खुद को अदना बतलाते थे
हुआ ईशारा जिस तरफ गुरु का,उसी तरफ बढ़ जाते थे
सहज सरल स्वभाव के कारण, सर्वत्र सम्मान ही पाते थे
आध्यात्म करके आत्मसात, भक्तिमय जनम  गुजारे थे ।।
सत्गुरु सबका प्यारा है,तुम सत्गुरु के प्यारे थे ।।

समभाव की स्थिति में ही जिए,रही खुशी या उदासी हो
जग में रहे आप इस तरह,जैसे श्रेष्ठ सन्यासी हो
शरीर तुम्हारी नहीं रही,पर तुम अचल अविनाशी हो
निराकार है कण-कण वासी, तुम हर हृदय निवासी हो
भक्ति में आवश्यक हैं जो, वो आदर्श तुम्हारे थे ।।
सत्गुरु सबका प्यारा है,तुम सत्गुरु के प्यारे थे ।।

**राधेश्याम 'सत्यार्थी'**

**सत्य-प्रेम और मानवता को, जीवन का आधार बनायें ।।**

अंदर कुछ,बाहर कुछ,ऐसा ना किरदार बनायें ।।
सत्य-प्रेम और मानवता को, जीवन का आधार बनायें ।।

होठों पर नकली मुस्कानें, अक्सर आज दिखाई देती
स्वार्थ से ऊपर उठकर, जीवन को इकसार बनायें ।।

जाति-पाँति से ऊपर उठना, न सीमित हो तकरारों तक
इक-दूजे को हम स्वीकारें,ऐसा इक संसार बनायें ।।

प्रभु की सूरत तब दिखती है,जब मन का दर्पण साफ रहे
जीवन में इस राज़ को जानें,जीवन को उपहार बनायें ।।

अधिकारों की बाज़ारों में, कर्तव्य के ग्राहक नहीं रहे
जीने के इस ढ़ँग को बदलें,जीवन ना बेकार बनायें ।।

जिनके बूते काम ये सारे, आज तलक सम्पन्न हुए
उसको ही सर्वेश्वर मानें,खुद को ना सरदार बनायें ।।

सावन की घटाएं यूँ बोलीं,रहमत की बारिश होगी मगर
सत्य-प्रेम और मानवता को, जीवन का आधार बनायें ।।

**राधेश्याम 'सत्यार्थी'**

# आओ ! सजायें दोस्तों, तस्वीर घर-संसार की ।

आओ ! सजायें दोस्तों, तस्वीर घर-संसार की ।
हाथ बढ़ाकर साथ में हो लें, चाह यही इस यार की ।।

रब की तू रचना है भाई,जीवन तेरा इक छंद है
तुकबंदी बनकर रह गया , मन में मचा क्यों द्वंद है
सृष्टि को महका सके,तू ऐसी एक सुगंध है
ईश का तू अंश है, जगदीश का मकरंद है
छोडकर के प्यार को, क्यों बातें करें तकरार की ।।

भौतिकता की दौड है, इच्छाओ की बाज़ार है
लालच का परदा ऑख पर, सम्बंध तार-तार है
खुद से खुद का सम्पर्क टूटा , अशुद्ध हुआ व्यवहार है
बगल में छुरी, मन में छुरी, ऐसा अब किरदार है
कर्तव्य की चिंता नहीं, चिंता है अधिकार की ।।

कर कृपा तू हे प्रभु,दम्भी हवा अब बंद हो
और मूल से जुड जायें सारे, मन में सदा आनंद हो
उदंडता का अंत हो,  द्वेष ना प्रचंड हो
रम रहे सब में तुम्ही हो,विश्वास ये अखंड हो
सोच सबकी शुभ बने, जीवन के शृंगार की ।।

**राधेश्याम 'सत्यार्थी'**

## प्यार गुरु का पाना है तो,हर इक से हम प्यार करें ।।

प्रेतात्मा नहीं,महात्मा हैं हम,महात्मा-सा व्यवहार करें ।।
प्यार गुरु का पाना है तो,हर इक से हम प्यार करें ।।

कद-पद के उस पार से देखें,तत्व सभी में एक समान
तत्व देखने के ही खातिर,गुरु ने दिया हमें ये ज्ञान
नाक न सिकोड़े देख किसी को, करते रहें सबका सम्मान
कार्य यही बस केवल ऐसा, जिससे खुश होता भगवान
ज्ञानी हैं तो ज्ञान को क्यों ना,जीवन में संचार करें ।।
प्यार गुरु का पाना है तो,हर इक से हम प्यार करें ।।

गुरुमत की परिभाषा कहती, सीखें केवल, ना कि सिखाए
गुरु ने कार्य दिया जो हमको, कार्य वही बस करते जाए
गुरु के संग निभाना है तो,हर गुरुसिख के संग निभाए
सदगुरु के आशीष के फल, इस तरह के जीवन में ही आए
अपना कम,सदगुरु का ज्यादा,सच्चे मन से प्रचार करें ।।
प्यार गुरु का पाना है तो,हर इक से हम प्यार करें ।।

कवियों के जीवन में बाबा , कृपा-दृष्टि तुम अब दो डाल
हो सुशोभित जहाँ भी हों हम, जीवन हो सबका खुशहाल
रहे प्रसन्नता मन के अंदर, हल हो जायें सभी सवाल
अंदर-बाहर सुंदर करके, कर दो सबको मालोमाल
जुड़कर गुरु के मिशन से हम सब, मानवता का विस्तार करें ।।
प्यार गुरु का पाना है तो,हर इक से हम प्यार करें ।।

**राधेश्याम 'सत्यार्थी'**

**पर-उपकारी पैगाम गुरु का,घर-घर तक पहुँचाना है ।**

पर-उपकारी पैगाम गुरु का,घर-घर तक पहुँचाना है ।
कवि-दरबार हेतु यहाँ पर,आना यह तो एक बहाना है ।।

गुरु न मिलता, हम न मिलते,करते चाहे लाख जतन
कृपा ये गुरुदेव की है,जो हुआ आज यह मिलवर्तन
बोली भाषा के दम्भ मिटे,यह कितना सुंदर परिवर्तन
इस तरह प्यारमय विश्व बने,अब चाह रहा यह मेरा मन
कार्य कर रहा सदगुरु,जो भी उसमें ही हाथ बँटाना है ।।
कवि-दरबार हेतु यहाँ पर,आना यह तो एक बहाना है ।।

गुरु का ज्ञान ही सक्षम है, जीवन में राह दिखाने को,
गुरु का ज्ञान ही सक्षम है,मंज़िल तक पहुँचाने को
गुरु का ज्ञान ही सक्षम है,बिछुड़ी रूह मिलाने को
गुरु का ज्ञान ही सक्षम है,सुंदर संसार बनाने को
इसलिए मोह के अंधियारों में,ज्ञान की ज्योत जलाना है ।।
कवि-दरबार हेतु यहाँ पर,आना यह तो एक बहाना है ।।

जैसे खुश्बू को पवन देवता,दूर-दूर तक ले जाये
सुगंध तुम्हारी संत सभी,ये उसी तरह से फैलायें
कृपा तुम्हारी जब हो जाए,ये कार्य तभी सम्भव हो पाये
यहाँ-वहाँ चौफेर हो रौनक,नाचें-गायें,खुशी मनायें
बन कर के गुरुमत का राही,गुरु से संबंध निभाना है ।।
कवि-दरबार हेतु यहाँ पर,आना यह तो एक बहाना है ।।

**राधेश्याम 'सत्यार्थी'**